1

सामाजिक तथ्यों की प्रकृति
(NATURE OF SOCIAL FACTS)

फ्रांसीसी विद्वानों में **इमाइल दुर्खीम** को **ऑगस्त कॉम्ट** का उत्तराधिकारी माना जाता है। वे सदैव समाजशास्त्र को विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित करने हेतु सचेत रहे और स्वयं अपने अध्ययनों में उन्होंने वैज्ञानिक पद्धति को अपनाया। दुर्खीम का विचार था कि सामाजिक घटनाएँ इतनी सरल नहीं हैं कि उन्हें केवल हम कल्पना-मात्र द्वारा समझ सकें। उन्हें समझने के लिए वास्तविक तथ्यों का संकलन अनिवार्य है।

दुर्खीम की समाजशास्त्र की अवधारणा

दुर्खीम के अनुसार समाजशास्त्र सामाजिक तथ्यों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है अर्थात् इसमें सामाजिक तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या की जाती है। सामाजिक तथ्यों की श्रेणी में वे कार्य करने, सोचने, अनुभव करने के तरीके शामिल हैं जो व्यक्ति के लिए बाहरी होते हैं तथा जो अपनी दबाव की शक्ति के माध्यम से व्यक्ति को नियन्त्रित करते हैं। इनके अनुसार एक सामाजिक तथ्य काम करने का वह प्रत्येक ढंग है जो निर्धारित अथवा अनिर्धारित है और जो व्यक्ति पर बाहरी दबाव डालने के योग्य है अथवा काम करने का वह प्रत्येक तरीका है जो एक निर्दिष्ट समाज में सर्वत्र सामान्य है, और साथ ही व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों से स्वतन्त्र वह अपना अस्तित्व बनाए रख सकता है। श्रम-विभाजन, आत्महत्या, धर्म, विधि (कानून) इत्यादि सामाजिक तथ्यों के ही कुछ प्रमुख उदाहरण हैं जिनका अध्ययन स्वयं दुर्खीम ने किया है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर दुर्खीम की समाजशास्त्र की अवधारणा के बारे में निम्नलिखित विचार महत्त्वपूर्ण दिखाई देते हैं—

(1) समाजशास्त्र सामाजिक तथ्यों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।

(2) समाजशास्त्र का सम्बन्ध संस्थाओं एवं सामाजिक प्रक्रियाओं की एक विस्तृत श्रेणी से है।

(3) समाजशास्त्र समाजों का विज्ञान है तथा समाज वास्तविकता है।

(4) समाजशास्त्र सामाजिक तथ्यों का वस्तुनिष्ठ रूप से अध्ययन करने वाला विज्ञान है।

(5) समाजशास्त्र तथ्यों के अवलोकन एवं व्याख्या की दृष्टि से अन्य विज्ञानों के समान है क्योंकि उनमें भी ऐसा ही किया जाता है।

(6) समाजशास्त्र की निश्चित व विशिष्ट विषय-वस्तु है।

(7) समाजशास्त्र में अध्ययन की प्रमुख पद्धति तुलनात्मक पद्धति है।

दुर्खीम की सामाजिक तथ्य की अवधारणा

सामाजिक तथ्य की अवधारणा को स्पष्ट करने से पहले यह जान लेना जरूरी है कि किन तथ्यों को साधारण सामाजिक तथ्यों की श्रेणी में रखा जाता है। प्रत्येक समाज में घटनाओं का एक विशिष्ट समूह होता है जो कि उन तथ्यों से भिन्न होता है जिनका अध्ययन प्राकृतिक विज्ञान करते हैं। सामाजिक तथ्यों की श्रेणी में कार्य करने, सोचने तथा अनुभव करने के वे तरीके आते हैं जिनमें व्यक्तिगत चेतना से बाहर भी अपने अस्तित्व को बनाए रखने की उल्लेखनीय विशेषता होती है। दुर्खीम की सामाजिक तथ्य की अवधारणा को इसके अर्थ एवं परिभाषा द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

सामाजिक तथ्य कार्य करने, सोचने तथा अनुभव करने के वे तरीके हैं जिनमें व्यक्तिगत चेतना से बाहर भी अस्तित्व बनाए रखने की उल्लेखनीय विशेषता होती है। इस प्रकार के विचार तथा व्यवहार व्यक्ति से बाह्य-मात्र ही नहीं होते अपितु अपनी दबाव शक्ति के कारण वे व्यक्ति की इच्छा से स्वतन्त्र अपने आपको उस पर लागू भी करते हैं। **दुर्खीम** के अनुसार, ''सामाजिक तथ्यों की श्रेणी में कार्य करने, सोचने तथा अनुभव करने के तरीके शामिल हैं जो व्यक्ति के लिए बाहरी होते हैं तथा जो अपनी दबाव की शक्ति के माध्यम से व्यक्ति को नियन्त्रित करते हैं।''

इस परिभाषा से दो बातें स्पष्ट होती है—**प्रथम**, सामाजिक तथ्य कार्य करने (चाहे वे संस्थागत हैं या नहीं), सोचने तथा अनुभव करने के तरीके हैं तथा **दूसरे**, इन तरीकों में व्यक्तिगत चेतना से **बाह्यता** (Exteriority) और **दबाव की शक्ति** (Constraint) की दो प्रमुख विशेषताएँ पाई जाती हैं। बाह्यता का अर्थ है कि सामाजिक तथ्यों का स्रोत व्यक्ति नहीं होता, अपितु समाज होता है, चाहे वह पूर्ण राजनीतिक समाज हो या उसका कोई आंशिक समूह; जैसे—धार्मिक समुदाय तथा राजनीतिक, साहित्यिक एवं व्यावसायिक संघ इत्यादि।

दबाव की शक्ति का अर्थ है कि सामाजिक तथ्य व्यक्ति के व्यवहार पर नियन्त्रण रखते हैं। जब हम कोई ऐसी बात करना चाहते हैं परन्तु दूसरे उसे पसन्द नहीं करते तथा न ही उसके करने की प्रशंसा करते हैं तो हम वह कार्य सामान्य रूप से नहीं करते अर्थात् व्यक्ति तब दबाव महसूस करता है जब वह किसी कार्य को करना चाहता है परन्तु कर नहीं पाता क्योंकि दूसरे व्यक्ति ऐसा नहीं चाहते।

दुर्खीम सामाजिक तथ्यों को 'सामाजिक प्रवाह' (Social current) से भी भिन्न बताते हैं। यद्यपि सामाजिक प्रवाह इतने स्पष्ट नहीं होते तथापि वे भी व्यक्ति पर सामाजिक तथ्यों के समान ही प्रभाव रखते हैं। दुर्खीम सामाजिक तथ्य की परिभाषा बच्चों के समाजीकरण के उदाहरण से स्पष्ट करते हैं। बच्चों की सम्पूर्ण शिक्षा का उद्देश्य उस पर देखने, अनुभव करने व कार्य करने के वे तरीके थोपना होता है जिन्हें वह स्वयं प्राप्त नहीं कर पाता। ये तरीके उसे शुरू से ही नियमित समय पर खाने, पीने तथा सोने को बाध्य करते हैं, आज्ञाकारिता सिखाते हैं तथा दूसरों के प्रति उचित व्यवहार, परम्पराओं तथा रीति-रिवाजों के प्रति सम्मान करना सिखाते हैं तथा श्रम करने की आवश्यकता आदि समझाते हैं।

दुर्खीम का कहना है कि एक विचार जो कि हम प्रत्येक व्यक्ति की चेतना में पाते हैं, एक आन्दोलन जो सब व्यक्तियों के द्वारा दोहराया जाता है, उसे सामाजिक तथ्य नहीं कहा जा सकता। यदि समाजशास्त्री इन विशेषताओं के माध्यम से उनकी व्याख्या करके सन्तुष्ट हो गए हैं तो इसका कारण यही है कि वे सामाजिक तथ्यों की व्यक्ति में प्रकट होने वाली आदतों से दुविधा में पड़ गए हैं। वास्तव में, यह एक भ्रम-मात्र है।

इस प्रकार, दुर्खीम समाजशास्त्र के क्षेत्र को एक निश्चित रूप में परिभाषित एवं परिसीमित करते हैं। वह सामाजिक तथ्यों को वस्तुओं के रूप में विचार करने पर बल देते हैं। अपनी पुस्तक ***'समाजशास्त्रीय पद्धति के नियम'*** के प्रथम अध्याय के अन्त में दुर्खीम सामाजिक तथ्य की परिभाषा इन शब्दों में देते हैं—''एक सामाजिक तथ्य काम करने का वह प्रत्येक ढंग है जो निर्धारित अथवा अनिर्धारित है और जो व्यक्ति पर एक बाहरी दबाव डालने के योग्य है अथवा काम करने का वह प्रत्येक तरीका है जो निर्दिष्ट समाज में सर्वत्र सामान्य है, और साथ ही व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों से स्वतन्त्र वह अपना अस्तित्व बनाए रखता है।''

सामजिक तथ्य की प्रकृति प्रमुख विशेषताएँ

दुर्खीम द्वारा दी गई सामाजिक तथ्यों की परिभाषा से सामाजिक तथ्यों की प्रकृति निम्न प्रकार से स्पष्ट होती है—

(1) काम करने, सोचने या अनुभव करने के तरीके (Ways of acting, thinking and feeling)—सामाजिक तथ्य काम करने, सोचने तथा अनुभव करने के तरीके हैं अर्थात् इनका स्रोत समाज है क्योंकि बार-बार दोहराए जाने के कारण इनमें स्थायित्व आ जाता है अर्थात् वे संस्थागत हो जाते हैं।

(2) बाह्यता (Exteriority)—सामाजिक तथ्य व्यक्तिगत चेतना के बाहर हैं अर्थात् इनका स्रोत व्यक्ति न होकर समाज या समाज का कोई आंशिक समूह (जैसे धार्मिक सम्प्रदाय एवं राजनीतिक, साहित्यिक तथा व्यावसायिक संघ इत्यादि) होता है। इसी विशेषता के आधार पर दुर्खीम सामाजिक तथ्यों को वस्तु मान कर वैज्ञानिक विधि द्वारा अध्ययन करने पर बल देता है क्योंकि इसे एक स्वतन्त्र वास्तविकता के रूप में अनुभव किया जा सकता है। वास्तव में, इस विशेषता द्वारा दुर्खीम सामाजिक तथ्यों को मनोवैज्ञनिक तथ्यों से पृथक् करने का प्रयास करते हैं जिनका स्रोत व्यक्तिगत चेतना है।

(3) दबाव या बाध्यता (Constraint)—सामाजिक तथ्य व्यक्ति से बाह्य-मात्र ही नहीं होते अपितु अपनी दबाव-शक्ति के कारण, व्यक्ति की इच्छा से स्वतन्त्र व अपने आपको उस पर लागू करने की भी क्षमता रखते हैं। दबाव के गुण के कारण सामाजिक तथ्य व्यक्ति के व्यवहार पर नियन्त्रण भी रखते हैं क्योंकि व्यक्ति वह व्यवहार नहीं करता जो अन्य व्यक्ति उससे नहीं चाहते। सामाजिक तथ्यों का सम्बन्ध व्यक्तिगत चेतना से नहीं होता अपितु सामूहिक चेतना से होता है। सामूहिक चेतना से सम्बन्धित होने के कारण काम करने, सोचने तथा अनुभव करने के ये तरीके व्यक्ति की परिधि से स्वतन्त्र अपनी सत्ता रखते हैं।

(4) सार्वभौमिकता (Universality)—सामाजिक तथ्यों में सार्वभौमिकता का गुण पाया जाता हैं। अन्य शब्दों, में यह कहा जा सकता है कि सामाजिक तथ्यों में वही तरीके सम्मिलित किए गए हैं जो समस्त समाजों में सामान्य रूप से पाए जाते हैं।

(5) सामाजिक उत्पत्ति (Social origin)—दुर्खीम इस बात को भी पूर्णत: स्पष्ट कर देते हैं कि सामाजिक तथ्यों का स्रोत चेतना नहीं अपितु सामूहिक चेतना अथवा समाज है। ये व्यवहार के वे तरीके हैं जो कि पुनरावृत्ति के कारण विशिष्ट तथा स्थायी हो जाते हैं, उन्हें ही सामाजिक तथ्य कहा जाता है।

इनके अतिरिक्त, सामाजिक तथ्यों में एक अन्य विशेषता यह पाई जाती है कि इनमें परिवर्तन अधिक तीव्रता से नहीं होता। वास्तव में, इनमें थोड़ा-बहुत स्थायित्व पाया जाता है जिसके कारण व्यक्ति इनका दबाव महसूस करते हैं।

सामाजिक तथ्य की अवधारणा की समीक्षा

दुर्खीम ने सामाजिक तथ्य की अवधारणा में व्यक्ति की महत्ता को बिलकुल समाप्त कर दिया है। हमारे कार्य करने तथा सोचने के ढंग हमारी मानसिक दशाओं से काफी सीमा तक प्रभावित होते हैं तथा जब हम मानसिक घटनाओं को ही मस्तिष्क से बाहर नहीं कर सकते तो बाह्यता (Exteriority) को सामाजिक तथ्यों का आधार कैसे माना जा सकता है। इसकी दूसरी विशेषता दबाव (Coercion) शक्ति भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही नहीं लगती क्योंकि यह सभी सामाजिक घटनाओं में नहीं पाई जाती है। केवल कुछ पहलुओं; जैसे कानून इत्यादि में ही यह गुण स्पष्टत: पाया जाता है। वास्तव में, यदि हम दुर्खीम की सामाजिक तथ्य की अवधारणा को मान लें तो व्यक्तियों का कोई अस्तित्व नहीं रहता।

यद्यपि दुर्खीम ने सामाजिक तथ्य की अवधारणा को विस्तारपूर्वक समझाया है फिर भी इसकी दोनों विशेषताओं—बाह्यता तथा बाध्यता—को वे पूर्ण रूप से उदाहरणों द्वारा स्पष्ट नहीं कर पाए हैं। परन्तु इन सभी आलोचनाओं के बावजूद दुर्खीम की सामाजिक तथ्य की अवधारणा समाजशास्त्रीय अवधारणाओं में प्रमुख है तथा वे यह स्पष्ट कहते हैं कि समाज केवल व्यक्तियों का योग नहीं अपितु इससे अधिक है। व्यक्ति आते-जाते रहते हैं, जबकि समाज निरन्तर बना रहता है। ●